Subject :- Sociology Date :- 12/05/2020
Class :- D-I (+1) Paper :- 1, 2nd & Subsidiary ①
Topic :- सामाजिक गतिशीलता एवं इसके प्रकार
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College ; Darbhanga

Online Study Material No :- (15)

# सामाजिक गतिशीलता (Social mobility)

गतिशीलता समाज का आवश्यक गुण है। समाज में सदैव परिवर्तन होते रहते हैं। मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्धों द्वारा ही समाज का निर्माण होता है। प्रत्येक मनुष्य की एक सामाजिक स्थिति होती है। मनुष्य की सामाजिक स्थिति विभिन्न आधारों पर निर्धारित होती है। कुछ समाजों में सामाजिक स्थिति जन्म द्वारा निर्धारित होती है तथा कुछ समाजों में कर्म द्वारा। प्रथम प्रकार के समाजों में मनुष्य के लिए अपनी सामाजिक स्थिति सामान्य तथा परिवर्तित कर पाना संभव नहीं होता है। कर्म पर आधारित सामाजिक स्थिति परिवर्तित करना संभव होता है। समाज में किसी सदस्य द्वारा अपनी सामाजिक स्थिति परिवर्तित करना ही सामाजिक गतिशीलता है। एक समूह की सदस्यता छोड़कर दूसरे समूह की सदस्यता ग्रहण करना ही सामाजिक गतिशीलता है। अब प्रश्न उठता है कि यह गतिशीलता किस प्रकार होती है? इसके प्रकार क्या है? सामाजिक गतिशीलता के क्या कारण है? इसके परिणाम क्या होते है? इन सब प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है। इन सब प्रश्नों पर विचार करने से पूर्व सामाजिक गतिशीलता की परिभाषा जान लेना आवश्यक है। सोरोकिन ने इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।

## परिभाषाएँ

फेयर-चाइल्ड के अनुसार "सामाजिक गतिशीलता से व्यक्तियों की एक समूह से दूसरे समूह की ओर गति से अभिप्राय है।"

Sorokin के शब्दों में - "गतिशीलता का अर्थ किसी स्थिति में वह परिवर्तन उत्पन्न हो जाना है जिससे नवीन सम्पर्क और प्रेरणाएँ उत्पन्न हो। इस प्रकार गतिशीलता की नवीन मानसिक सम्पर्कों से सम्बन्धित स्थानीय परिवर्तन कहकर परिभाषित किया जा सकता है।

इस परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक गतिशीलता सामान्य प्रकार का परिवर्तन नहीं है। सामाजिक गतिशीलता के परिणामस्वरूप व्यक्ति को नवीन प्रेरणाएँ प्राप्त होती है तथा उनकी अनुक्रियाएँ भी परिवर्तित हो जाती है। संक्षेप में कह सकते हैं कि सामाजिक गतिशीलता में शारीरिक

Scanned with CamScanner

②

एवं मानसिक दोनो प्रकार के परिवर्तन होते हैं। सोरोकिन के अनुसार केवल मनुष्यों की स्थिति का ही गतिशीलता से सम्बन्ध नही बल्कि सामाजिक तथ्यों एवं मूल्यों में होनेवाली गतिशीलता भी सामाजिक गतिशीलता कहलाती है। सोरोकिन के ही शब्दों में "सामाजिक गतिशीलता का अर्थ एक सामाजिक स्थिति से दूसरी में किसी व्यक्ति, सामाजिक तथ्य अथवा सामाजिक मूल्य का संक्रमण होता है अथवा किसी भी उस वस्तु का संक्रमण होता है जो मनुष्यों के प्रयत्नों द्वारा निर्मित अथवा संशोधित हो"

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ एवं परिभाषा का वर्णन के बाद इसके प्रकारो का वर्णन करना भी अनिवार्य हो जाता है।

## सामाजिक गतिशीलता के प्रकार

(A) क्षैतिज गतिशीलता (Horizontal Mobility) → क्षैतिज गतिशीलता मे सम्बन्धित व्यक्ति अथवा तथ्य की स्थिति परिवर्तित नही होती। गतिशीलता के अन्तर्गत व्यक्ति का केवल समूह अथवा स्थान परिवर्तित हो जाता है। Sorokin ने क्षैतिज गतिशीलता को इस प्रकार व्यक्त किया है," क्षैतिज गतिशीलता अथवा परिवर्तन से व्यक्ति अथवा सामाजिक तथ्य के एक समूह में स्थिति पर स्थानान्तरण से आशय है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि क्षैतिज गतिशीलता के अन्तर्गत व्यक्ति अथवा सामाजिक तथ्य का केवल स्थान परिवर्तित हो जाता है, स्थिति या स्तर में कोई परिवर्तन नही आता। इस प्रकार की गतिशीलता को विभिन्न उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। किसी श्रमिक का एक औद्योगिक संस्थान से दूसरे औद्योगिक संस्थान में चला जाना, एक फैक्ट्री के मैनेजर का दूसरे समान स्तरवाली फैक्ट्री में मैनेजर के पद पर चला जाना क्षैतिज गतिशीलता ही कहलाएगा। एक पुरुष द्वारा एक स्त्री के पति के पद को त्याग कर दूसरी समान स्तर की स्त्री के पद को ग्रहण करना भी क्षैतिज गतिशीलता ही कहलाएगी।

### क्षैतिज गतिशीलता के प्रकार

1. क्षेत्रीय गतिशीलता → एक भौगोलिक क्षेत्र से हटकर दूसरे क्षेत्र में निवास करना क्षेत्रीय गतिशीलता कहलाती है।
2. व्यावसायिक गतिशीलता → समान व्यावसायिक स्तर पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाना व्यावसायिक गतिशीलता कहलाता है।

Scanned with CamScanner

3. पारिवारिक गतिशीलता → पति अथवा पत्नी द्वारा विवाह-विच्छेद एवं पुनर्विवाह के द्वारा स्थान परिवर्तन करने को पारिवारिक गतिशीलता कहा जाता है।

4. नागरिकता सम्बन्धी गतिशीलता → एक राष्ट्र की नागरिकता छोड़ कर दूसरे राष्ट्र की नागरिकता प्राप्त करना ही नागरिकता सम्बन्धी गतिशीलता है।

5. धर्म-परिवर्तन सम्बन्धी गतिशीलता → एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को अपनाना भी क्षैतिज गतिशीलता का उदाहरण है।

6. राजनीतिक गतिशीलता → एक दल की सदस्यता को छोड़कर दूसरे दल की सदस्यता ग्रहण करना ही राजनीतिक गतिशीलता कहलाती है।

(B) उदग्र गतिशीलता (Vertical mobility) → सामाजिक गतिशीलता का दूसरा मुख्य रूप उर्ध्वाधर गतिशीलता कहलाता है। उर्ध्वाधर गतिशीलता के अन्तर्गत व्यक्ति अथवा तथ्य की स्थिति में परिवर्तन आ जाता है। उसकी स्थिति इसके फलस्वरूप उच्च अथवा निम्न हो सकती है। ब्लियट तथा मैरिस ने इस प्रकार की गतिशीलता को इन दो शब्दों में स्पष्ट किया है "उर्ध्वाधर गतिशीलता का अर्थ वर्गीय संरचना में ऊपर से नीचे की ओर होने वाला परिवर्तन है।"

इस कथन से स्पष्ट है कि उर्ध्वाधर गतिशीलता के अन्तर्गत ऊपर और नीचे दोनों ओर गति होना संभव है। सोरोकिन ने उर्ध्वाधर गतिशीलता को इस प्रकार परिभाषित किया है "उर्ध्वाधर सामाजिक गतिशीलता का अर्थ किसी व्यक्ति अथवा सामाजिक तथ्य द्वारा एक स्थिति समूह से दूसरे स्थिति समूह में संक्रमण करना है।"

इस कथन से स्पष्ट है कि क्षैतिज गतिशीलता से भिन्न उर्ध्वाधर गतिशीलता के अन्तर्गत व्यक्ति अथवा किसी सामाजिक तथ्य की सामाजिक स्थिति में स्पष्ट अन्तर आ जाता है। उदग्र सामाजिक गतिशीलता में संक्रमण हो सकते हैं :-

1. आरोही उर्ध्वाधर गतिशीलता → आरोही उर्ध्वाधर गतिशीलता उस गतिशीलता को कहा जाता है जिसमें व्यक्ति अथवा सामाजिक तथ्य की स्थिति क्रमशः निम्न से उच्च हो जाती है। इस प्रकार की गतिशीलता दो प्रकार की हो सकती है। प्रथम के अन्तर्गत एक निम्न स्तर का तथा निम्न समूह का सदस्य अपने प्रयास द्वारा एक उच्च समूह की सदस्यता प्राप्त कर लेता है। दूसरे प्रकार के अन्तर्गत व्यक्ति अपनी योग्यता के बल पर अपने

Scanned with CamScanner

(A)
ही समूह में निम्न से उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है।

2. अवरोही उर्ध्वाधर गतिशीलता → अवरोही उर्ध्वाधर गतिशीलता के अन्तर्गत व्यक्ति अथवा किसी सामाजिक तथ्य की उच्च स्थिति क्रमशः निम्न हो जाती है। यह गतिशीलता भी दो प्रकार की होती है। प्रथम प्रकार में सम्बन्धित व्यक्ति केवल अपनी व्यक्तिगत कमियों के कारण उच्च स्थिति से गिरकर निम्न स्थिति प्राप्त कर लेता है। दूसरे प्रकार के अन्तर्गत सम्बन्धित समूह का ही ह्रास हो जाता है जिसके फलस्वरूप उसके सदस्यों की स्थिति अपने आप ही निम्न हो जाती है।

S.N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U